सर्विस सहज ते सहज भी है।डिफिकल्ट से डिफिकल्ट भी है।एक बाप को पूरा न याद करने से पूरा खुशी का पारा ना चढ़ता है। अज्ञान काल मे कोई गरीब को एडाप्ट करे तो उनको खुशी का पारा चढ़ जाय। यहॉ तो बेहद का बाप एडाप्ट करते हैं तो खुशी का पारा ना चढ़ता है। हम बेहद के बाप की संतान हैं। इन्होंने एडाप्ट किया है। परमपिता कहने से खुशी चढ़ जाना चाहिए परन्तु माया ऐसी है जो पता है परमपिता कहते हैं फिर गुम हो जाती है। वहॉ गरीब को साहुकार एडाप्ट करे तो कब फारकती न दे। यहॉ निश्चय भी करते हैं स्वर्ग का वर्सा मिलता है फिर भी छोड़ देते हैं। राम का वन 8–10 बरस पद फिर जाकर रावण के बनते हैं।ये भी एक वन्डर है।हिम्मत नहीं रहती याद करने की। लिखा–पढ़ी भी बहुत करते,सर्विस भी बहुत अच्छी करते हुए फिर भी माया से हराय देते हैं।क्या माया ऐसी जादूगरनी है? बाप कहते हैं मैं बच्चों के आगे प्रत्यक्ष होता हूँ। बाप बच्चों से सब कार्य कराते हैं।बाप आते हैं शुभ कार्य करने। रावण अशुभ कार्य करते।तुम जानते हो दुनियॉ रावण तरफ है। तुम राम की तरफ हो। राम शुभ ही कराते हैं।समझ होना चाहिए मैं कर्तव्य शुभ करता हूँ या अशुभ। मिसाल के लिए चित्र सामने रखे हैं। सतयुग में कब इन्हों से अशुभ कार्य नहीं होते। किसको भी दुःख न देना,अशुभ कार्य न करना है। इनसे विकर्म बन जाते।फिर दरकार ही क्या है? दिल भी अन्दर खाती है।मैं अशुभ कार्य करती हूँ फिर भी अपने ऊपर ग्लानी नहीं होती है कि हम स्वर्ग के मालिक कैसे बनेंगे ; क्योंकि अपन को 21 जन्म लिए घाटा लगाती हूँ। रो–रोकर क्षमा मॉगनी चाहिए बाबा हम कब न करेंगे।बाबा कहेंगे तुम अपना ही खाना खराब करते हो। अपन को फायदा डाला, घाटा डाला कल्प–कल्पान्तर का बन जाता है।बाबा को बताने से मदद मिलती है।सच्चे दिल पर साहब राजी होता है।मार्ग इतना अच्छा सहज है। किसको दुःख देने की दरकार न है।तुम सुखधाम का मार्ग बताते रहो प्रेम से। बच्चों को बाप जब हर्षित देखते हैं तो समझाते हैं ये खुशी से नाचता रहता है। सच्चा2 रूपबसंत है मुख से रत्न ही निकलते रहेंगे। एक–दो की ग्लानी करना वो पत्थर निकालना। बाबा के लिए कोई कहे हमको दुःख दिया , तकलीफ दिया कोई प्रूफ कर दिखाए। कब भी नहीं। जानते भी हैं इससे बुराइयॉ होती हैं तो भी कहता नहीं हूँ मुरली में समझाय देता हूँ। बाबा समझते हैं बदला लेने देरी नहीं करते और ही डिससर्विस करेंगे। ऐसा चांस क्यों देवें जो उल्टी–सुल्टी बात बतलाय किसी का अकल्याण न कर दें। हमेशा मीठा ही बोलता हूँ। जैसे कर्म मैं करता हूँ तुम भी करते रहो।कोई गुस्सा करे तुम शान्त में रहो। कोई के पिछाड़ी चटकना भी न है।कह देना चाहिए टाइम नहीं है।कोई और समय आना। तुम्हारे इस समय आने का मुहूरत न है। तुम सब बी.के डाडे से वर्सा ले रही हो। तुम भी आकर वर्सा लो। रग देखनी चाहिए । तुम रूहानी सर्जन हो ना। रग देखने की भी समझ चाहिए । प्रैक्टिस अच्छी चाहिए । आजकल दुनियॉ में गंदे बहुत हैं।छोड़ते किसको भी नहीं हैं। सामान चोरी कर देते खून कर देते। बहुत बच्चों की दिल भी होती है जल्दी जावें अपनी राजधानी में परन्तु अभी पूरा काम हुआ कहॉ है। इतने अजिन बने कहॉ हैं।सूर्यवंशी , चन्द्रवंशी ,धीरे 2 झाड़ वृद्धि को पाता है।वो तो एक ही भाषण से कितने बौद्धी बनाय देते हैं।यहॉ तो कितनी मेहनत करनी होती है मनुष्य को देवता बनाने में। पिछाडी का खूनी नाहक खेल बहुत खैफनाक है । तुम आपस मे बहलते रहेंगें। ये फलाना राजा बनेगा। खुशी में रहेंगे।दुनियॉ हाय2 करती रहेगी।बहुत–बहुत दुःख का समय होता है। तुम फरिश्ते मौज करते रहेंगे। आसुरी सम्प्रदाय मच्छरों माफिक मरते रहेंगे। उस समय के लिए अवस्था बहुत जमानी चाहिए जो हम ठहर सकें। महाकाल के तुम बच्चे हो ना। अकालमूर्त ये है। अकालतख्त शरीर में निवास कर वर्सा देते हैं। मनुष्य ऐसे नहीं कहते हैं कृष्ण के तन में भगवान था। कृष्ण भगवानुवाच कहते। यहॉ है शिवभगवान

सुख का सागर.....परमपिता परमात्मा है? कोई तो कह देते दोनों ही एक है। खुद ही रूप धारण कर लीला करते हैं। कितना भी माथा मारो। फिर भी कहेंगे ईश्वर सर्वव्यापी है। वो बाप है , उनसे वर्सा मिलना है। यह बात उनकी बुद्धि में ठहरेगी जो ब्राह्मण बनने वाला होगा। अभी सैम्पलिंग लग रहा है ना। गवर्मेंट सैम्पलिंग लगाती है झाड़ का और यहॉ बेहद का बाप सैम्पलिंग लगा रहे हैं आदि सनातन देवी–देवता धर्म का। कोई कहॉ किस धर्म में होंगे, कोई कहॉ होंगे। बाप कहते हैं जो देवताओं के भक्त हों उन्हों को समझाने की कोशिश करनी है। शिव के मन्दिर में चले जाओ। पुजारियों को जाकर समझाओ। यह कौन है ?शिवबाबा के भी बहुत नाम रख दिए हैं। बवरी नाथ भी कहते हैं।बवर में कॉटा होता है। बबुल ट्री होता है तो शिवबाबा का नाम रखा है बबूलनाथ। कॉटों को फूल बनाने वाला। बरोबर बाबा कॉटों को फूल बना रहे हैं।यह है कॉटों की पापात्माओं की दुनियॉ । पाप ही करते रहते हैं। ईश्वर सर्वव्यापी कहना यह पाप है ना। बच्चे भी भ्रष्टाचार से पैदा करते हैं।फिर उनको विख के लिए शादी कराते हैं। बाप आकर विख का हथियाला बॉधना कैंसल कराते हैं। काम चिक्षा से उतर ज्ञान चिक्षा पर बैठने की प्रतिाज्ञा कराते हैं। तुम हो रुहानी ब्राह्मण , वो हैं कलियुगी ब्राह्मण। तुम हो संगमयुगी ब्राह्मण। तुम ब्राह्मण नए बनते जाते हो। जब पूरा बन जावेंगे तब यह तुम्हारा शरीर छूट जावेगा। तुमको फिर आप समान बनाना है। जैसे भ्रमरी कीड़ों को आप समान बनाती है ना। सन्यासी भी भ्रमरी का मिसाल देते हैं। परन्तु वह तो कुछ बनाते नहीं हैं। तुम तो यहॉ मनुष्य को देवता,विष्टा के कीड़े को ज्ञान अमृत पिलाए भूँ–भूँ कर परिज़ाद बना देते हो। बाप आकर पापात्मा से पुण्यात्मा स्वर्ग का मालिक बना देते हैं। कच्छुए का भी मिसाल देते हैं। वो भी यहॉ की बात है।इन आर्गन्स से कर्म करते हो। कोई काम ना है तो अपन को सागर–––––––––––––– पुण्य आत्मा है सतयुग में पापात्मा है यहॉ। बाकी वो है ही साइलेन्स वर्ल्ड। (निर्वाणधाम) ।हम आत्माएं वहॉ शान्ति में रहती हैं। आत्मा इन आर्गन्स द्वारा (उच्चारण) करती है , बोलती है। (ओम)शान्ति। मैं आत्मा शान्त स्वरूप हूँ।सतोप्रधान आत्मअभिमानी बनना है। इस मसय तमोप्रधान हैं। आत्मा बोलती है हम पापात्मा हैं। पाप कौन कराते हैं? रावण। वास्तव में शान्ति तो आत्मा का स्वधर्म है।चलते–फिरते तुम शान्त में रह सकते हो। अशरीरी हो बैठ जाएंगे। यह अभ्यास तुम बच्चों को सिखाया जाता है। बाप भी कहते हैं ओमशान्ति। मैं भी शान्त स्वरूप हूँ। इन आर्गन्स से बोलता हूँ। मुझे इनका लोन लेना पड़ता है। दिखलाते हैं ना रथ पर अर्जुन को ज्ञान दिया। एक को बैठ थोड़े ही ज्ञान सुनावेंगे। यह सब रॉग है। रथ तो वास्तव में यह (साकार तन) है। भाग्यशाली रथ , नन्दी गण। है तो मनुष्य परन्तु मन्दिरों में फिर बैल को रख दिया है। अर्थ है ना शिव के आगे बैल को क्यों रखा है। यह समझते नहीं है। कहते हैं शंकर की (सवारी) बैल पर थी। शिव और शंकर इकट्ठा कर देते हैं। शंकर भी है सूक्ष्मवतन वासी। वो कैसे सवारी करेंगे? है बड़ी सहज बात। वास्तव में है यह ह्युमन रथ। इनको नंदी गण कहा जाता है। बाप इन पर सवार होता है। लोन लिया हुआ है। बच्चों को बैठ समझाता हूँ। भगवानुवाच हे बच्चों अभी तुम जानते हो स्वर्ग के (लिए हम) पुरुषार्थ कर रहे हैं। यह भी जानते हो आधा कल्प बाद फिर रावण राज्य (शुरू) होता है। (देवताएं) भी वाममार्ग में चले जाते हैं। पहले 2 (होती) है शिव की अव्यभीचारी पूजा। इस समय है व्यभिचारी भक्ति। कोई किस देवता की करते , कोई किस देवता को मानते।योग भी अनेक प्रकार के सीखते हैं।प्राचीन भारत का योग जो मशहूर है वो तो बाप ही सिखलाते हैं। वो ही सबका भगवान है ना कि श्रीकृष्ण, इसलिए पहेली डाली है सर्वगुण सम्पन्न .... श्री कृष्ण गीता का भगवान है या पतित पावन ज्ञान का सागर?

लिखते हैं बाबा,फलाना रूठ गया है। आते नहीं हैं । तो बाबा लिख देते हैं क्या मुरली को फारकती दी है। मुरली को फारकती दी तो मुरली सुनाने वाले शिवबाबा को दी। जगाना पड़ता है । कोई बात पर रूठ कर मुरली नहीं सुनते हैं।तरस पड़ता है पता नहीं विषय सागर में डूब ना पड़े। फिर पत्र आदि का भी असर नहीं होता है। माया एकदम पकड़ लेती है । महारथी को भी माया एकदम पकड़ लेती है। गफलत करने से माया एकदम कच्चा खा जाती है। इसलिए बाबा कहते हैं खबरदार रहना। तूफान बहुत आवेंगे परन्तु खबरदार रहना। एक को भूत आए तो दूसरे को खबरदार करना है।एक–दो को सावधान कर उन्नित को पाना है। इसलिए युगल ही चलते हैं तो ठीक होता है।एक दो को उठाते हैं।कामचिक्षा पर बैठने से जल मरेंगे। अब तो ज्ञान चिक्षा पर बैठना है। यह भी शास्त्रों में है ना सागर के बच्चे .....। सब बच्चे हैं ना। कितने दुःखी हैं।बाप फिर ज्ञान की वर्षा कर सबको जगाते हैं। यह है कयामत का समय। सबका हिसाब–किताब चुक्तू होना है। तुम्हारे पाप का खाता चुक्तू हो जाना है। जब सतोप्रधान बन जावेंगे तो जैसे कि तुम्हारा सुख जमा होता जाता है। भविष्य के लिए यहॉ जमा करना है। गोल्डन एज में आना है यह गीत बहुत अच्छा है। कहते हैं पुरानी पाप की दुनियॉ नर्क से पुण्य की दुनियॉ स्वर्ग में ले चलो। बाप ही स्वर्ग की स्थापना , नर्क का विनाश कराते हैं। ड्रामा अनुसार रावण राज्य खतम होना है। फिर सतयुग में रावण कब बनाते ही नहीं। यह भारत का आधाकल्प का पुराना दुश्मन है जिसको जलाते ही आते हैं। तुम बच्चे जानते हो अभी बाकी 8–10वर्ष जलावेंगे फिर रावण राज्य ही खतम हो जावेगा। सब मिट्टी में मिल जावेंगे। यह बड़ा भारी यज्ञ है। इसमें आहुती चाहिए। पिछाड़ी में

यज्ञ की सब सामग्री स्वाहा कर देते हैं ना। यह है रूद्रज्ञान यज्ञ। सब इसमें स्वाहा हो खतम हो जावेंगे।.....

उनको भी मदद तो मिलती है ना। क्लास जितना –– हो जिसमें सब सुन सकें बस। हमको तो अब गोल्डेन एज में जाना है। सिवाय याद के और कोई उपाय नहीं है।बाप कहते हैं बच्चे तुमको अपना और दूसरों का कल्याण करना है।तुम यह हास्पिटल खोलो। बहुतों की आर्शीवाद तुमको मिलेगी। मनुष्य कालेज खोलते हैं औरों के लिए। खुद तो न पढ़ते हैं। तो उनको भी दूसरे जन्म में विद्या अच्छी मिल जाती है। बाप समझाते हैं कोई गरीब हो वा साहुकार हो।सिर्फ 3पैर पृथ्वी का प्रबन्ध हो जिसमें बैठ ज्ञान और योग सिखलावे। पत्थर से पारस बनावे। 3पैर पृथ्वी के भी नहीं देते हैं। कहते यह भाई–बहन बनाते हैं। विश्व का वर्सा छुड़ाते हैं। फिर दुनियॉ कैसे चलेगी? गालियॉ देते हैं। यह तो गाया हुआ है कलंकीधर बनने वालों को कुतरे भौंकते हैं। तुम अब विश्व के मालिक बनते हो। कितनी भौंक करते हैं। लड़ पड़ते हैं। कहते कृष्ण की इतनी रानियॉ थीं। हम तो फिर भी एक रखते हैं।बहुत तो बाजारी बैल भी होते हैं।यह वैश्यालय है ना। भारत शिवालय था। शिवबाबा ने स्वर्ग स्थापन किया। अब नर्क है। फिर बाप शिवालय बनाते हैं। कई तो माताएं भी विख बिगर रह नहीं सकतीं। अब किसको पुकारें? धनी–धोरी तो कोई है नहीं। विख के लिए केस भी कर देते हैं। इसलिए शुरू में बाबा ने डायरैक्शन निकाला था। सब चिट्ठी ले आई थीं कि हम ज्ञान अमृत पीने जाती हैं।(हिस्ट्री सुनाना) अभी तुम बच्चों का खाना आबाद करने लिए तुमको श्रीमत मिल रही है। घर–बार भी सम्भालते रहो। साथ2 यह भूँ–भूँ करते रहो। जितना सहन करोगे अच्छा है। अत्याचार हो तब तो पाप का घड़ा भरे। बाप समझाते हैं बच्चे अपना चार्ट रखो। अमृतवेले याद करो। तो तुम्हारी पाप का चार्ट आहिस्ते2 बढ़ता जावेगा। मेहनत बिगर थोड़े ही ऊँच पद पावेंगे। पढ़ेंगे ही नहीं तो नापास हो जावेंगे। और क्या होगा। श्रीमत पर चलना है। विश्व का मालिक बनना कम बात है क्या । पान का बीड़ा उठाना है। यहॉ तो परीक्षा भी ली जाती हैं ।इकट्ठे रह ,इकट्ठे सो कर दिखाओ।

बीच में ज्ञान तलवार हो। इकट्ठे रहेंगे ही नहीं तो मालूम कैसे पड़ेगा। अच्छा , याद प्यार गुड मर्निंग।